INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

RAS

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

मुख्य परीक्षा हेतु

HANDWRITTEN NOTES

[भाग -3]

नीतिशास्त्र + विश्व का इतिहास

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 3

नीतिशस्त्र + विश्व का इतिहास

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**RAS (Rajasthan Administrative Service) (मुख्य परीक्षा हेतु)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**Rajasthan State and Subordinate Services Combined Competitive Exams**" **मुख्य** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें/*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/40daqf

Online Order करें - https://shorturl.at/qR235

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2023)

क्र. सं.	अध्ययन	पेज न.
	नीतिशास्त्र	
1.	नीतिशास्त्र एवं मानवीय मूल्य	1-10
2.	नैतिक संप्रत्यय	11-15
3.	निजी एवं सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र की भूमिका	15-24
4.	भगवद्गीता का नीतिशास्त्र एवं प्रशासन में इसकी भूमिका	25-32
5.	भारतीय एवं विश्व के नैतिक चिंतकों एवं दार्शनिकों का योगदान	32-44
6.	प्रशासन में नैतिक चिंता, द्वंन्द एवं चुनौतियाँ	45-47
7.	नैतिक निर्णय – प्रक्रिया तथा उसमें योगदान देने वाले कारक	48-49
8.	केस अध्ययन	50-53
	आधुनिक विश्व का इतिहास	
1.	पुनर्जागरण व धर्म सुधार	54-85
2.	अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम, फ्रांसीसी क्रांति (1789 ईस्वी) व औद्योगिक क्रांति	85-120
3.	एशिया व अफ्रीकी में साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद	120-143
4.	विश्व युद्धों का प्रभाव (प्रथम महान युद्ध)	143-172

प्रशासकीय नीतिशास्त्र

अध्याय – I

नीतिशास्त्र एवं मानवीय मूल्य

नीतिशास्त्र (Ethics)

Ethics: Ethics ग्रीक भाषा के 'एथिका' से बना है, जिसकी उपत्ति एथिकोस से हुई है, जिसका अर्थ 'रीति - रिवाज' है।

नीतिशास्त्र की परिभाषा : समाज में रहने वाले मनुष्य के ऐच्छिक आचरण, सामाजिक मूल्यों / नियमों और दार्शनिक सिद्धांतों का नैतिक मूल्यांकन को नीतिशास्त्र कहते है उचित-अनुचित, सही-गलत का निर्धारण किया जाता है। तथा सामाजिक मूल्य की स्थापना की जाती है।

भारतीय सामाजिक सुधारकों ने सामाजिक कुरीतियों को मिटाने में सफलतापूर्वक योगदान दिया है। जहाँ कुछ प्रतिष्ठित हस्तियों ने महिला शिक्षा के लिए अपना समर्थन दिया, वहीं कुछ भारतीय समाज सुधारकों ने विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया। भारत में सुधारकों ने बिना किसी पूर्वाग्रह के बेहतर राष्ट्र के निर्माण की दिशा में काम किया है।

भारत में, समाज और धर्म परस्पर जुड़े हुए हैं। इसलिए धार्मिक बुराइयों, जैसे अंधविश्वास और अन्य बुराइयों ने समाज को बार-बार प्रभावित किया है। धर्मगुरुओं के साथ-साथ भारतीय समाज सुधारकों ने भी इस तरह के प्रचलित रिवाजों से लोगों को मुक्त करने का प्रयास किया। विभिन्न धार्मिक और सामाजिक पृष्ठभूमि से प्रभावित होकर, उन्होंने जनता को शिक्षित करने के लिए सरल तरीके अपनाए । बोलचाल की भाषा में गीत, कविता, नैतिक कथाएँ, सामुदायिक कार्यों का आयोजन और अन्य कुछ ऐसे तरीके हैं जिन्हें भारतीय समाज सुधारकों ने अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए लागू किया है।

फ्राइड का नीतिशास्त्र : फ्राइड के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति की कुछ मूलभूत प्रवृतियाँ होती हैं।
जैसे - भूख लगना, नींद आना, हँसना ।
इन मूल प्रवृत्तियों से एक विशिष्ट व्यक्तित्व का निर्माण होता है। क्योंकि व्यक्ति समाज में रहता है इसलिए उसे सामाजिक नियमों के अनुसार कार्य करना पड़ता है इसके कारण एक विशिष्ट व्यक्तित्व का निर्माण होता है जिसे सुपरइगो कहते हैं।

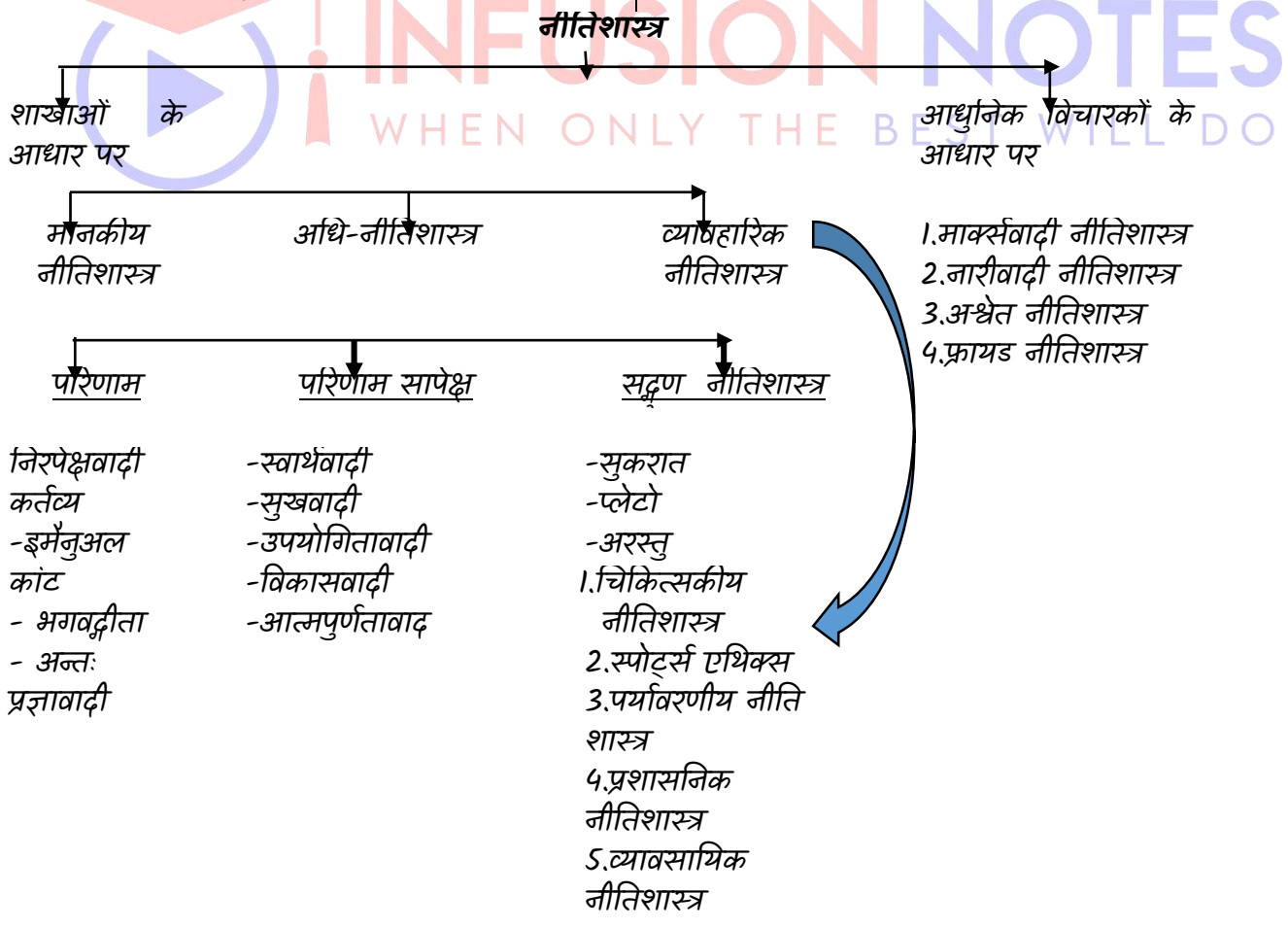

मार्क्सवादी नीतिशास्त्र	नारीवादी नीतिशास्त्र	अश्वेत नीतिशास्त्र
• समाज 2 वर्ग में विभाजित I.बुर्जुआ वर्ग- शोषक 2.सर्वहारा- शोषित • परम्परागत नैतिक नियम बुर्जुआ वर्ग के द्वारा तैयार किए गए हैं। • मार्क्स ऐसे परम्परागत नियमों का विरोध करता है। • परम्परागत नैतिकता में हिंसा को अनैतिक माना गया है परन्तु मार्क्स के अनुसार हिंसा नैतिक है। • हिंसक क्रांति के माध्यम से ही सर्वहारा वर्ग की तानाशाही स्थापित की जा सकती है।	• इसके अनुसार सामान्य नैतिक नियम पुरुषों के लिए बनाए गए है। • इसके अनुसार जिसे Mainstream कहा जाता है, वह वास्तव में Male stream है। • सामान्यतः निजी जीवन में सरकारी हस्तक्षेप को सही नही माना जाता है। • परन्तु जीवन में भी शोषणकारी कार्य होतें है। इसलिए सरकार के द्वारा हस्तक्षेप किया जाना उचित है।	• इसके अनुसार सामान्य नैतिक नियमों में अश्वेतों के विरुद्ध भेदभाव किया गया है। इसलिए नैतिक नियमों की पुर्नव्याख्या की जानी चाहिए। • अतः अश्वेतों को भी सम्मानपूर्वक जीवन जीनें का अधिकार मिलना चाहिए।

प्रसिद्ध भारतीय सामाजिक सुधारक

भारतीय समाज सुधारकों के निरंतर प्रयासों को ब्रिटिश साम्राज्यवादियों द्वारा भी मान्यता दी गई थी। स्वामी विवेकानंद, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, रामकृष्ण परमहंस, दयानंद सरस्वती, राजा राम मोहन राय और अन्य भारतीय हस्तियों ने महिलाओं के विकास और ज्ञान के लिए बात की। ब्रिटिश शासन के तहत भारतीय समाज सुधारकों ने भी पश्चिमी शिक्षा को लोकप्रिय बनाया। सबसे प्रमुख भारतीय समाज सुधारकों में, महात्मा गांधी, श्रीराम शर्मा आचार्य, वीरचंद गाँधी, गोपाल हरि देशमुख, जमनालाल बजाज, बालशास्त्री जम्भेकर, जवाहरलाल नेहरू, विनोबा भावे, धोंडो केशव कर्वे, एनी बेसेंट उल्लेखनीय हैं।

(I) **स्वामी विवेकानंदः** स्वामी विवेकानंद एक नव्य वेदांती विचारक हैं, क्योंकि इन्होंने ब्रह्म की सत्ता के साथ भौतिकवाद को भी स्वीकार किया है। हालांकि स्वामी विवेकानंद ने किसी विशेष सामाजिक सुधार की शुरुआत नहीं की थी, लेकिन उनके भाषण और लेखन सभी प्रकार की सामाजिक और धार्मिक बुराइयों के खिलाफ थे। उनका मुख्य ध्यान उस समय के भारत के युवाओं की कमजोरी को दूर करने पर था, शारीरिक और मानसिक दोनों। विवेकानंद के अनुसार व्यक्ति को शारीरिक व मानसिक रूप से सशक्त होना चाहिए क्योंकि आध्यात्मिक संदेश को कमजोर व्यक्ति नहीं समझ सकता।

(I) विवेकानंद नव्य-वेदांत का प्रचार करने वाले मुख्य भारतीय समाज सुधारकों में से एक थे, जो मोटे तौर पर हिंदू आधुनिकता का अनुवाद करते हैं। उनकी अवधारणा की पुनर्व्याख्या अभी भी बहुत सफल है जिसने भारत के भीतर और बाहर हिंदू धर्म की एक नई समझ और सराहना पैदा की है। इन्होंने शिकांगो के धर्म सम्मेलन में भाग लिया तथा सनातन धर्म के उच्च आदर्शों की व्याख्या की । इनके अनुसार सनातन धर्म में अन्य सभी धर्मों और पंथो को समाहित किया गया है।

यह उनका प्रभाव था जो पश्चिम में योग, पारमार्थिक ध्यान और भारतीय आध्यात्मिक आत्म-सुधार के अन्य रूपों के उत्साहपूर्ण स्वागत का प्रमुख कारण था।

इन्होंने राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका को सबसे महत्त्वपूर्ण बताया।

स्वामी विवेकानंद के कुछ महत्त्वपूर्ण कथन :-

(i) अपना जीवन किसी एक लक्ष्य पर निर्धारित करो। अपने पूरे शरीर को उस एक लक्ष्य से भर दो। और हर दूसरे विचार को अपनी जिंदगी से निकाल दो। यही सफलता की कुंजी है।

(ii) किसी दिन, जब आपके सामने कोई समस्या न आए। आप सुनिश्चित हो सकते हैं कि आप गलत मार्ग पर चल रहे हैं।

(iii) उठो, जागो और तब तक नहीं रुको, जब तक लक्ष्य न प्राप्त हो जाए।

राजा राममोहन रायः राजा राम मोहन राय पहले व्यक्ति थे जिन्होंने इन अमानवीय प्रथाओं के खिलाफ लड़ने का फैसला किया। उन्हें भारतीय पुनर्जागरण का वास्तुकार और आधुनिक भारत का जनक माना जाता है। यह भारतीय समाज सुधारक भारतीय उपमहाद्वीप में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन, ब्रह्म समाज के संस्थापक थे, जिसने सती, बहु विवाह, बाल विवाह और जाति व्यवस्था के रूप में हिंदू रीति-रिवाजों के खिलाफ धर्मयुद्ध किया था। राजा राम मोहन राय ने महिलाओं के लिए संपत्ति विरासत के अधिकार की भी मांग की। वो जाति से ब्राह्मण थे।

स्वामी दयानंद सरस्वती : स्वामी दयानंद वेदों की शिक्षाओं में महान विश्वास रखते थे। उन्होंने मूर्ति पूजा और अन्य अंधविश्वासों को खत्म करने के लिए हिंदू धार्मिक ग्रंथों की आलोचना की। उन्होंने हिंदू धर्म के नाम पर प्रचारित की जा रही सभी गलत चीजों के खिलाफ तर्क दिया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की तथा 'वेदों की ओर लौटो' प्रसिद्ध नारा दिया। इन्होंने ही सबसे पहले 'स्वराज्य' का नारा दिया जिसे बाद में लोकमान्य तिलक ने आगे बढ़ाया।

महर्षि दयानन्द ने समाज सुधार में व्यापक योगदान दिया। तथा तत्कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों तथा अंधविश्वासों और रूढ़ियों जैसे - बालविवाह, सतीप्रथा, पर्दा प्रथा आदि का विरोध किया। उनके ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में समाज को आध्यात्म और आस्तिकता से परिचित कराया। इन्होंने विधवा विवाह, अंतरजातीय विवाह, नारी सशक्तिकरण, मातृभाषा आदि का समर्थन किया।

बाबा आमटे

बाबा आमटे का जन्म 26 दिसम्बर 1914 को महाराष्ट्र स्थित वर्धा जिले में हिंगणघाट गांव में हुआ था। उनके पिता देवीदास हरबाजी आमटे शासकीय सेवा में लेखपाल थे। बरोड़ा से पाँच-छः मील दूर गोरजे गाँव में उनकी जमींदारी थी। उनका बचपन बहुत ही ठाट-बाट से बीता। वे सोने के पालने में सोते थे और चांदी के चम्मच से उन्हें खाना खिलाया जाता था। बचपन में वे किसी राज्य के राजकुमार की तरह रहे। रेशमी कुर्ता, सिर पर ज़री की टोपी तथा पाँव में शानदार शाही जूतियाँ, यही उनकी वेश - भूषा होती थी। जो उनको एक आम बच्चे से अलग कर देती थी। उनकी चार बहनें और एक भाई था। जिन युवाओं ने बाबा को कुटिया में सदा लेटे हुए ही देखा- शायद ही कभी अंदाज लगा पाए होंगे कि यह शख्स जब खड़ा रहा करता था तब क्या कहर ढाता था। अपनी युवावस्था में धनी जमींदार का यह बेटा तेज कार चलाने और हॉलीवुड की फिल्म देखने का शौकीन था। अंग्रेजी फिल्मों पर लिखी उनकी समीक्षाएँ इतनी दमदार हुआ करती थीं कि एक बार अमेरिकी अभिनेत्री नोर्मा शियरर ने भी उन्हें पत्र लिखकर प्रशंसा की।

बाबा आमटे ने एम.ए.एल.एल.बी. तक की पढ़ाई की। उनकी पढ़ाई क्रिस्चियन मिशन स्कूल नागपुर में हुई और फिर उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय में क़ानून की पढ़ाई की और कई दिनों तक वकालत भी की। महात्मा गाँधी और विनोबा भावे से प्रभावित बाबा आमटे ने सारे भारत का दौरा कर देश के गाँवों मे अभावों में जीने वालें लोगों की असली समस्याओं को समझने की कोशिश की। देश की आजादी की लड़ाई में बाबा आमटे अमर शहीद राजगुरु के साथी रहे थे। फिर राजगुरू का साथ छोड़कर गाँधी से मिले और अहिंसा का रास्ता अपनाया। विनोबा भावे से प्रभावित बाबा आम्टे ने सारे भारत का दर्शन किया। और इस दर्शन के दौरान उन्हें गरीबी, अन्याय आदि के भी दर्शन हुए और इन समस्याओं को दूर करने

वह शिक्षा जिसमें व्यक्ति प्रकृति के साथ संबंध स्थापित कर सके तथा उसकी सृजनात्मकता में वृद्धि हो।

५. भेदभाव रहित समाज : सभी मनुष्य ईश्वर की सृजनात्मक शक्ति की अभिव्यक्तियाँ हैं।

12. डॉ. भीमराव अम्बेडकर :- भारत के संविधान का पितामह कहे जाने वाले भीमराव अंबेडकर एक व्यवहारिक विचारक थे। इन्होंने संवैधानिक मूल्यों जैसे - स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, सामाजिक - आर्थिक न्याय, धार्मिक सुधार आदि का समर्थन किया। अम्बेडकर सामाजिक भेदभाव, असमानता और अस्पृश्यता के धोर विरोधी थे तथा वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था को इन समस्याओं की मूल मानते थे।

इन्होंने दलितों के उद्धार हेतु जीवन भर अनेक कार्य किये। इन असमानताओं व भेदभाव के कारण इन्होंने हिन्दू धर्म की आलोचना की। अम्बेडकर शिक्षा को मनुष्य का आधार मानते थे। ये मानवाधिकारों के समर्थक थे इन्होंने साम्यवाद और पूंजीवाद दोनों को नकार दिया और आदर्शवाद के बजाय यथार्थवाद पर अधिक बल दिया।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन :- यह एक नव्य वेदांती विचारक हैं।

यह भारतीय संस्कृति के संवाहक, प्रख्यात शिक्षाविद् महान दार्शनिक और एक आस्थावान हिन्दू विचारक थे। उन्हें इन्हीं गुणों के कारण 1954 ई. में भारत सरकार ने उन्हें सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से अलंकृत किया।

- इनके अनुसार भारतीय दर्शन शंकराचार्य के वेदांत दर्शन पर आधारित है।
- इन्होंने कई विरोधी विचारधाराओं में समन्वय स्थापित किया।

जैसे - आदर्शवाद और यथार्थवाद
धर्म और विज्ञान
भौतिकता और आध्यात्मिकता

- इनके अनुसार 'परमसत्' जगत का मूल तत्त्व है जो कि पूर्ण चैतन्य है, यह अनन्त एवं पूर्ण स्वतंत्र है। परमसत् को इन्द्रियों, तर्क और बुद्धि के माध्यम से नहीं जाना जा सकता। इसका सिर्फ आत्म अनुभव किया जा सकता है जो कि अंतः प्रज्ञा से संभव है।
- इनके अनुसार धर्म के दो स्वरूप होते हैं -

(1) बाहरी स्वरूप :- इसका संबंध विभिन्न पूजा पद्धतियों, पुस्तकों, रीति - रिवाजों, पूजा स्थलों आदि से है।

(2) आंतरिक स्वरूप - इसका संबंध धर्म के मूल संदेश से है जो सार्वभौमिक है। यह सभी धर्मों में समान होता है।

- राधाकृष्णन के अनुसार धर्म के बाहरी स्वरूप की बजाय आंतरिक स्वरूप पर अधिक बल दिया जाना चाहिए। इससे धार्मिक मतभेदों को दूर किया जा सकता है

- **परिवार, सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं का मानवीय मूल्यों को विकसित करने में योगदान**

मूल्य शब्द से तात्पर्य किसी भौतिक वस्तु अथवा मानसिक अवस्था के उस गुण से है, जिसके द्वारा मनुष्य के किसी उद्देश्य अथवा लक्ष्य की पूर्ति होती है।

मूल्यों का व्यक्ति के आचरण, व्यक्तित्व तथा कार्यों पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है।

मूल्य हमारे व्यवहार या नैतिक आचार संहिता का महत्त्वपूर्ण अवयव हैं। ये मूल्य ऐसे आदर्श या मानक होते हैं जो किसी समाज या संगठन या फिर व्यक्ति के लिये दिशानिर्देश के रूप में कार्य करते हैं। विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से विकसित ये मूल्य हमारे मन में गहराई तक बैठे होते हैं।

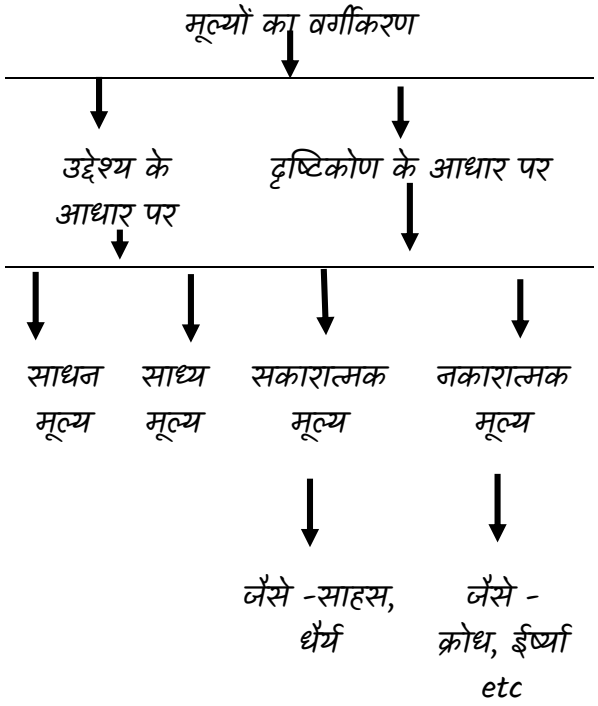

साधन मूल्य - ऐसे मूल्य के माध्यम से किसी उच्चतर मूल्य की प्राप्ति की जाती है । जैसे - व्यायाम के माध्यम से स्वास्थ्य शरीर ।

साध्य मूल्य - ये सबसे उच्चतम मूल्य है जीवन की सभी गतिविधियां इन्हें प्राप्त करने के लिए की जाती हैं

जैसे - सत्य, समानता, स्वतंत्रता, न्याय आदि।

मूल्यों की विशेषताऐ :-

(i) मूल्य के दो पहलू होते हैं। प्रथम - विषयवस्तु और दूसरा - तीव्रता।

(ii) मूल्य कुछ अंश तक आंतरिक भाव होते हैं, जो व्यक्ति के व्यक्तित्व में प्रतिबिम्बित होते हैं।

(iii) क्षेत्र विशेष के संदर्भ में मूल्य के महत्व में अंतर पाया जाता है।

(iv) मूल्य अमूर्त होते हैं।

(v) मूल्य जन्मजात नहीं होते हैं। इन्हें सीखा जाता है।

विषय क्षेत्र के आधार पर मूल्य :-

(i) सामाजिक मूल्य - अधिकार, कर्त्तव्य, न्याय आदि।

(ii) मानव मूल्य - नैतिक मूल्य, आध्यात्मिक मूल्य आदि।

(iii)नैतिक मूल्य - न्याय, ईमानदारी आदि

(iv)आध्यात्मिक मूल्य - शांति, प्रेम अहिंसा आदि

(v) भौतिक मूल्य - भोजन, मकान, वस्त्र आदि।

(vi) सौंदर्यात्मक मूल्य - प्रकृति, कला आदि

(vii) मनोवैज्ञानिक मूल्य - प्रेम, दया आदि।

कार्य क्षेत्र के आधार पर:-

(i) राजनीतिक मूल्य - ईमानदारी, सेवा भाव आदि

(ii) न्यायिक मूल्य - सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता आदि

(iii) व्यावसायिक मूल्य - जबावदेही, जिम्मेदारी, सत्यनिष्ठा आदि

मूल्य एवं अभिवृत्ति में संबंध :-

समानताएँ :-

(i) दोनों ही सीखे जाते हैं।

(ii) दोनों ही प्रायः स्थायी होते हैं।

(iii) दोनों में ही व्यक्ति के व्यवहार को प्रेरित करने की क्षमता होती हैं।

असमानताएँ –

(i) अभिवृत्ति प्रायः मूल्यों से ही उत्पन्न होती हैं।

(ii) विशिष्ट परिस्थिति में अभिवृत्ति मूल्य को निर्धारित करती हैं।

(iii) मूल्य तथा अभिवृत्ति परस्पर संबंधित हैं, इसलिए मूल्यों में परिवर्तन होने से अभिवृत्ति भी स्वतः बदलने लगती हैं।

(iv) कभी - कभी मूल्यों द्वारा अभिवृत्ति एवं व्यवहार का संबंध निर्धारित होता हैं। किसी विशेष मूल्य के कारण व्यक्ति का व्यवहार उसकी अभिवृत्ति से असंगत हो सकता हैं।

मूल्यों के विकास में परिवार की भूमिका -

मूल्यों के विकास में परिवार वह पहली सीढ़ी है जिस पर चढ़कर मानवीयता के लक्ष्य को पाना आसान लगता हैं। इसलिए परिवार कब, कैसे, कितना और किस प्रकार के मूल्यों को देना चाहता है, यह प्रश्न महत्त्वपूर्ण हो जाता हैं। 6 वर्ष तक की आयु एक ऐसा पायदान है जब बच्चा दूसरों के आचरण से सबसे अधिक प्रभावित होता है, इसलिये प्राथमिक स्तर पर मूल्य इसी उम्र में निर्धारित होते हैं। इसलिए परिवार को बच्चे की पहली पाठशाला कहा जाता है, क्योंकि सर्वप्रथम मूल्य निर्माण की प्रक्रिया परिवार से ही प्रारम्भ होती हैं।

हालाँकि बाद में भी मूल्य विकसित होते हैं, लेकिन प्रभाव का स्तर धीरे-धीरे कम हो जाता हैं।

परिवारों मूल्यों का सतत् स्त्रोत है, क्योंकि व्यक्ति जीवन भर परिवार के सम्पर्क में रहता हैं।

प्रशिक्षण, प्रोत्साहन, निंदा व दंड कुछ ऐसे उपकरण हैं, जिनसे ये मूल्य विकसित किए जा सकते हैं। यह भी ध्यान देने योग्य है कि परिवार एकल है या संयुक्त संभव है एकल परिवार से वैयक्तिक होने का मूल्य प्राप्त हो और संयुक्त परिवार से साथ रहने का। परिवार का शैक्षणिक स्तर और आर्थिक स्तर भी मूल्यों की पृष्ठभूमि तय करने में सहायक होते हैं।

परिवार में अलग - अलग सदस्यों से व्यक्ति अलग - अलग मूल्य ग्रहण करता हैं। इसमें माता की भूमिका सबसे महत्त्वपूर्ण होती हैं। अतः माता को 'पहली शिक्षिका' कहा जाता हैं।

मूल्यों के विकास में समाज की भूमिका-

समाज की असली भूमिका वैसे तो विद्यालय जाने के साथ शुरू होती हैं किंतु उससे पूर्व 6 वर्ष तक समाज और परिवार मूल्य विकास में बराबर भागीदार होते हैं। आरम्भ में मूल्यों का विकास कम होता है, लेकिन समाज से जैसे - जैसे संपर्क बढ़ता है, मूल्यों का विकास भी उत्तरोत्तर होता जाता हैं।

मीडिया, सामाजिक समूहों से वार्तालाप,सह-शिक्षा विद्यालय(Co-education schools) आदि से समाज के नैतिक मानदंड,सामाजिक गतिशीलता, परिवर्तन जैसे विचारों का प्रभाव पड़ता है। विभिन्न धर्मों, जातियों और क्षेत्रों के लोगों के साथ संपर्क से धैर्य, सहिष्णुता जैसे मूल्यों को विकसित करना आसान होता है। ध्यातव्य है कि जो जितना सामाजिक होगा, उस पर समाज का उतना ही प्रभाव पड़ेगा।

समाज से व्यक्ति राजनीतिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, प्राकृतिक मूल्य, व्यावसायिक मूल्य आदि अपनाता है। अतः व्यक्ति के मूल्य निर्माण में समाज की विशिष्ट भूमिका है।

I. समाज से सीखे जाने वाले मूल्य-

सकारात्मक मूल्य	नकारात्मक मूल्य
• सहयोग • भाईचारा • सोहार्द • सहिष्णुता • राजनैतिक मूल्य • सामूहिक प्रयास • कर्तव्य चेतना • प्रकृति प्रेम	• जातिवाद • सम्प्रदायीकता • अन्धविश्वास • रुढिवादिता

मूल्यों के विकास में शिक्षण संस्थानों की भूमिका-

शिक्षण संस्थान दो स्तरों पर मूल्य विकास में योगदान देते हैं- आधारभूत शिक्षा के स्तर पर व उच्च शिक्षा के स्तर पर। आधारभूत मूल्यों का प्रभाव ज़्यादा होता है, जबकि उच्च शिक्षण संस्थान प्रायोगिक मूल्यों का विकास कर पाते हैं। व्यक्तित्व परिवर्तन की संभावना उच्च स्तर पर ज़्यादा होती है। विभिन्न विचारधाराओं के संपर्क में आने का क्रम भी उच्च शिक्षण संस्थानों से ही शुरू होता है। विभिन्न पाठ्यक्रमों द्वारा स्वतंत्रता, समानता, अहिंसा, नैतिक शिक्षा का प्रभाव भी मूल्य विकास में सहायक होता है। इस प्रक्रिया में अध्यापक और छात्र समूह भी अहम योगदान देते हैं।

शिक्षण संस्थान, परिवार व समाज से सीखे गये नकारात्मक मूल्यों जैसे - रुढ़िवाद, अंधविश्वास आदि को दूर कर मनुष्य में ऐसे मूल्यों का निर्माण करता है जो परिवार व समाज में उपलब्ध नहीं होते हैं। जैसे - संवैधानिक मूल्य, लोकतांत्रिक मूल्य आदि।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मूल्यों के विकास में परिवार, समाज और शिक्षा की बड़ी भूमिका होती है।

I. मूल्यों से लाभ / हानियाँ

लाभ	हानि
• इससे व्यक्तित्व का विकास होता है। • सकारात्मक मूल्यों से समाज में सकारात्मक आचरण बढ़ता है। जिससे समाज की प्रगति सुनिश्चित होती है। • मूल्यों से निर्णय लेनें की प्रक्रिया तेज़ हो जाती है । • इससे व्यक्ति सत्यनिष्ठ बनता है।	• कुछ मूल्य अपने आप में ही नकारात्मक हैं, जो समाज को नुकसान पहुंचाते है। • अलग अलग समाजों और अलग अलग पीढ़ियों के बीच अलग अलग मूल्य होतें है। • इनके बीच टकराव की स्थिति उत्पन्न होती है। • सामाजिक मूल्यों के कारण समाज में रुढिवादिता बनी रहती है।

अभ्यास प्रश्न

गत वर्षों में प्रश्न – पत्र में आए हुए प्रश्न :-

प्रश्न-1. मानवीय मूल्यों के संवर्द्धन में समाज की भूमिका समझाइये।

प्रश्न-2. मनुष्य की नैतिक उन्नति समाज की सर्वांगीण उन्नति पर निर्भर करती है। विवेचना कीजिए। (50 शब्द)

प्रश्न-3. "परिवार मनुष्य के नैतिक विकास की सबसे महत्त्वपूर्ण संस्था है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए। (50 शब्द)

प्रश्न-4. मूल्य निर्माण में शिक्षण संस्थान एक महत्ती भूमिका का निर्वहन करते हैं। आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

प्रश्न-5. नैतिक जीवन में मूल्यों की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

अध्याय – 6

प्रशासन में नैतिक चिन्ता, द्वन्द एवं चुनौतियाँ

नैतिक चिताएं एवं दुविधाएँः अर्थ और महत्त्व - केस स्टडीज के मामलें में विस्तृत रूप से वर्णित नैतिक दुविधा, एक ऐसी स्थिति है जिसमें दिए गये विकल्पों में से एक का चयन करना शामिल है, जहाँ कोई भी विकल्प स्पष्ट रूप से सही अथवा गलत नहीं होता है। यदि इनमें से कोई भी विकल्प स्पष्ट रूप से सही अथवा गलत होता, तो नैतिक दुविधा की स्थिति उत्पन्न ही नहीं होती, ऐसे में गलत विकल्प के बजाय सही विकल्प का चयन करना आसान होता है। अतः नैतिक दुविधा एक ऐसी स्थिति से उत्पन्न होती है जो किसी दी गई, सामान्यतः अवांछित या जटिल स्थिति में, सिद्धांतों के प्रतिस्पर्धी समूह के मध्य किसी एक के चयन हेतु बाध्य करती है। संभवतः हितों का संघर्ष इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण है, जो सार्वजनिक क्षेत्र के नेतृत्व को नैतिक दुविधा में डाल सकता है। सामान्यतः, यह ऐसी परिस्थिति में स्पष्ट होता है जहाँ व्यक्तिगत मूल्य अथवा व्यक्तिगत हित का पेशेवर नैतिकता अथवा पेशेवर कर्त्तव्यों के साथ संघर्ष होता है।

नैतिक दुविधाओं के कुछ प्रकार :-

लोक सेवक निम्नलिखित के मध्य संघर्ष के स्थिति में स्वयं को दुविधा में पाते हैं : लोक प्रशासन के विभिन्न मूल्यों के मध्य नैतिक दुविधा, जैसे - दक्षता बनाम जवाबदेही ;

- आचरण संहिता के विभिन्न पहलूओं के मध्य - कर्त्तव्यों के निष्पादन के लिए पुरुस्कार अथवा उपहार स्वीकार करना; व्यक्तिगत मूल्य बनाम वरिष्ठों के निर्देश या सरकारी निर्देश ; पेशेवर नैतिकता बनाम एक पर्यवेक्षक / प्राधिकारी द्वारा जारी किसी अन्यायपूर्ण आदेश का अनुसरण ; एवं अस्पष्ट या प्रतिस्पर्धी जवाबदेही, जैसे - विभाग अथवा समाज के प्रति । लोक प्रशासन में नैतिक दुविधाओं से निपटने की प्रक्रिया को एकीकृत करने वाले मौलिक सिद्धांतों या मानदंडो के समूह में निम्नलिखित शामिल हैं-

प्रशासन की लोकतान्त्रिक जवाबदेही ; - संसदीय लोकतंत्र में सिविल सेवाएँ राजनीतिक नेतृत्व के अधीन होती हैं।

क्योंकि वे राजनीतिक नेतृत्व के प्रति जबाबदेह होते हैं।

इसलिए सिविल सेवकों को राजनीतिक नेतृत्व के आदेशों का पालन करना चाहिए। परन्तु यदि कोई राजनेता कोई अवैध कार्य करने का आदेश देता है तब सर्वप्रथम आदेश की अवैधता के बारे में राजनेता को बताया जाना चाहिए।

यदि फिर भी वह अपने आदेश पर बना रहता है तब आदेश लिखित में माँगे जाने चाहिए तथा उसका जबाब भी लिखित में दिया जाना चाहिए।

विधि का शासन और वैधता का सिद्धांत ;- . सिविल सेवकों को सदैव कानून का पालन करना चाहिए, यह सुनिश्चित करता है कि जनहितों की रक्षा की जा रही है।

यह मनमाने निर्णय लेने को नियंत्रित करता है तथा शक्ति का दुरुपयोग को रोकता है।

पेशेवर सत्यनिष्ठा ;- सिविल सेवकों का आचरण नैतिक संहिता व आचार संहिता के अनुसार होना चाहिए क्योंकि वह आंतरिक आत्मनियंत्रण का स्त्रोत है।

- नागरिक समाज के प्रति अनुक्रियाशीलता। इन्हें लोक प्रशासन में नीति संबंधी तर्क की अनिवार्यताओं के ALIR (उत्तरदायित्त्व, वैधता, सत्यनिष्ठता, अनुक्रियाशीलता) मॉडल के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

सामान्यतः **नैतिक दुविधा** तीन प्रकार की होती है।

(i) व्यक्तिगत हानि नैतिक दुविधा :- ऐसी परिस्थितियाँ जिसमें नैतिक आचरण के अनुपालन के परिणामस्वरूप लोक सेवक या निर्णयकर्ता को व्यक्तिगत हानि होती है।

जैसे - पद को खतरे में डालना।

मूल्यवान रिश्तों को चोट पहुँचाना आदि

(I) सही बनाम सही नैतिक दुविधा :- ऐसी परिस्थिति जब दो या दो से अधिक नैतिक मूल्य परस्पर विरोधी अवस्था में हो। जैसे - एक लोकसेवक को जनता के समक्ष पारदर्शी व जबाबदेही होना चाहिए, साथ ही गोपनीयता की शपथ उसे ऐसा करने से रोकती है।

अध्याय – 8

केस अध्ययन

1. आप एक प्रखंड के प्रखंड विकास अधिकारी हैं और आपको एक सामूहिक विवाह समारोह से आमंत्रण आता है। जब आप उस समारोह में जाते हैं तो आप देखते हैं कि 50% दुल्हा दुल्हन नाबालिक हैं। ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे?

उत्तर:- बाल विवाह पर इतने कानून बनने के बाद भी बाल विवाह भारत के कई गाँव में होती आ रही है जो कि एक गंभीर सामाजिक समस्या है। इसके खिलाफ कई कानून तो बन गए लेकिन समाज के कुछ मानसिक दोष के कारण इस कानून की अवहेलना होती आ रही है।

प्रखंड विकास अधिकारी होने के नाते मेरा पहला दायित्त्व यह है कि सबसे पहले उस विवाह पर रोक लगाकर इसकी जानकारी स्थानीय प्रशासन को दूंगा। उसके बाद वहाँ के स्थानीय लोगों को कानून के खिलाफ काम नहीं करने के लिए तथा इस आपराधिक कृत्य से लोगों को अवगत कराकर इसे रुकवाने का सुझाव दूंगा। प्राय: अधिकारी ऐसा नहीं करते हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि इसमें हस्तक्षेप करने से क्या फायदा लेकिन अधिकारी ही ऐसा करेंगे तो स्थानीय लोगों को ऐसे अपराधिक कार्य करने में और बल मिलेगा।

एक अधिकारी होने के नाते मेरा यह भी दायित्त्व बनता है कि ना सिर्फ इस पर रोक लगाया जाए बल्कि इस कुरीति को दूर करने के लिए जागरूकता अभियान भी चलाया जाए। इसके लिए एनजीओ या अन्य संस्थाओं का भी सहायता लिया जा सकता है। उसके बाद इस कुरीति के खिलाफ अभियान चलाने के लिए अपने उच्च अधिकारी के साथ वार्ता कर एक योजना बनाकर इस पर जल्द से जल्द कार्य शुरू करवा दिया जाए। क्योंकि इसके खिलाफ कानून तो बन चुका है लेकिन अभी भी कई ऐसे गाँव व कस्बे हैं जहाँ पर स्थानीय प्रशासनिक लापरवाही के कारण या आपराधिक कार्य होते आ रहे हैं। इसके लिए वहाँ के प्रशासन को सख्ती बरतनी चाहिए।

2. आप एक उपजिलाधिकारी हैं और आपको सूचना मिली है कि आपके जिला के अंतर्गत एक बालिका गृह में आपराधिक गतिविधियां हो रही हैं। ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे?

उत्तर:- भारत में बालिकाओं पर सबसे अधिक समस्याएं होती रहती हैं जैसे कि उनका शोषण, बाल श्रम, बाल विवाह जैसी घटनाएँ आम हो गई हैं। वर्तमान में भारत में 15 वर्ष से कम उम्र के बच्चों की जनसंख्या 42% है इसलिए बच्चों में यह समस्या भारत में ज्यादा होती रहती है। बालिका गृह में वहीँ बच्चियाँ आती है जिनके माता-पिता नहीं होते हैं, 18 साल से कम उम्र की लड़कियाँ काम कर रही होती है वैसे बच्चे बालिका गृह में आती है। ऐसे बच्चे जो पहले ही उत्पीड़न की शिकार हो चुकी है और स्थानीय संगठनों या एनजीओ के द्वारा ऐसे बच्चे को बाल सुधार गृह में लाकर रखा जाता है।

एक अधिकारी होने के नाते मेरा यह दायित्त्व है कि मैं उस बालिका गृह का स्वयं सर्वेक्षण करूं और वहाँ की बच्चियों से खुद जाकर बात करूंगा और उनके साथ क्या समस्या आ रही है उसका जानकारी प्राप्त करूं। उसके बाद जो भी इसके लिए जिम्मेदार होंगे, उनके ऊपर लिखित कार्यवाही करते हुए उन्हें तत्काल निलंबित करना यह मेरा पहला कदम होगा। इसके बाद मैं यह जानने का प्रयास करूंगा कि इस बालिका गृह में और क्या-क्या आपराधिक कार्य हो रहे हैं और इसके लिए कौन - कौन जिम्मेदार हैं उनके खिलाफ कार्रवाई शुरू करूंगा। इसके बाद जब समस्या पर नियंत्रण बन जाएगा तब जाकर बच्चों को शिक्षा के प्रति जागरुक कर शिक्षण कार्य शुरू करवाना यह मेरा उत्तरदायित्त्व है और अगर वहां शिक्षण संस्थाएं उपलब्ध नहीं होगी तो तत्काल शिक्षकों को नियुक्त कर वहां शिक्षा प्रारंभ करवा लूंगा इसके साथ-साथ रचनात्मक क्रिया एवं क्रियान्वयन को कार्य रूप दूंगा। जब एक बालिका गृह की समस्या का निदान हो जाएगा तो उस जिले के सभी बालिका गृह का सर्वेक्षण मैं करूंगा और वहाँ के सभी समस्याओं का निवारण करूंगा। एक अधिकारी होने के नाते यह मेरा कर्त्तव्य है।

स्थिति :- मिस्टर कुमार नागपुर शहर में पिछले 3 वर्षों से मुख्य अग्निशमन अधिकारी के पद तैनात हैं। उनके कुशल प्रबंधन के कारण वहाँ आग लगने की घटनाएँ कम हुई हैं, किसी की जान नहीं गई है

तथा संपत्ति का ज्यादा नुकसान नहीं हुआ है। शहर के लोगों तथा स्थानीय मीडिया की नजर में वे सेलिब्रिटी बन गये हैं। शहर में स्थानीय निकायों के चुनाव का समय आया, तो शहर के महान मतदाताओं का समर्थन प्राप्त करने के लिए मुख्य अग्निमिशन अधिकारी के वेतन में 25 प्रतिशत की तथा अन्य अग्निमिशन कर्मचारियों के वेतन में 10 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी कर दी।

प्रश्न :- ऐसी स्थिति में मिस्टर कुमार को क्या करना चाहिए क्या उन्हें बढ़ी हुई वृद्धि को स्वीकार कर लेना चाहिए? या / नहीं अपने उत्तर के समर्थन में तर्क प्रस्तुत करें।

उत्तर :- आग बुझाना एक सामूहिक कार्य (team work) है, अतः टीम लीडर को स्पष्ट रूप में समानता का भाव रखना चाहिए। यदि मिस्टर कुमार अपने वेतन 25 प्रतिशत की वृद्धि को स्वीकार कर लेते हैं तो उससे उनकी छवि एक असंवेदनशील तथा स्वयं के लाभ हेतु काम करने वाले अधिकारी की बन जाएगी, ऐसी स्थिति में कर्मचारियों उसी उत्साह और लगन से उनके नेतृत्त्व में काम करना नहीं चाहेंगे। सरकारी संगठनों में नैतिक व्यवहार को प्रोत्साहित करने के लिए एक साहसी नेतृत्व अति आवश्यक होता है, अतः मिस्टर कुमार को उतनी ही वेतन वृद्धि स्वीकार करनी चाहिए, जितनी की अन्य अग्निमिशन कर्मचारियों को दी जाती है।

स्थिति :- श्याम नंदन कलेक्टर के कार्यालय में क्लर्क के पद पर तैनात है। कार्यालय में स्टाफ की कमी होने की वजह से उसे कार्यालय भवन के ऊपर प्रत्येक सुबह झंडा लगाने एवं प्रत्येक शाम को झंडा उतरने का कार्य भी दिया गया है हालांकि यह कार्य उसके अधिकारी का हिस्सा नहीं है।

एक दिन अपराधी से नेता बने देवेश भल्ला नामक व्यक्ति का निधन हो जाता है। अतः राज्य सचिवालय द्वारा सभी जिला कलेक्टर को आदेश जारी किया जाता है की देवेश भल्ला के निधन पर शोक मानाने के उद्देश्य से उनके कार्यालय भवन का तिरंगा आधा झुका कर रखा जाए। श्याम नंदन को यह समाचार टेलीविज़न द्वारा प्राप्त होता है। उसे यह समाचार सुनकर बड़ा गुस्सा आता है और इसे वह तिरंगे का मजाक मानता है। ऐसा होने के पीछे एक वजह यह भी है की कुछ समय पहले श्याम नंदन का एक घनिष्ठ मित्र दंगे में मारा गया था और ऐसा शायद देवेश भल्ला ने करवाया था।

श्याम नंदन निर्णय लेता है की वह अगले दिन कार्यालय ही नहीं जाएगा तथा ऊपर मंजिल की चाबी भी अपने पास रख लेगा। वह इस बात के लिए आश्वत है, की उसके इस कार्य के लिए उसे कोई दण्ड भी नहीं दिया जाएगा, क्योंकि झंडा फहराने या झुकाने सम्बन्धी कार्य उसके आधिकारिक कार्य का भाग नहीं है। उसे लगता है कि अधिक -से -अधिक यह होगा की इस बात की कलेक्टर साहब उसे डाँटेंगे, किन्तु वह इस बात की परवाह नहीं करता है।

प्रश्न :- क्या आपको लगता है कि श्याम नन्दन ने सही निर्णय लिया है यदि हाँ तो क्यों? यदि नहीं तो क्यों नहीं?

उत्तर :- श्याम नन्दन ने गलत निर्णय लिया है। उसके कारण कार्यालय के अन्य कार्मिक राज्य सचिवालय के आदेश का पालन नहीं कर पाएँगे। इतना ही नहीं, इसके कारण कलेक्टर साहब भी राज्य सचिवालय के सामने परेशानी में आ जाएँगे। किसी को सूचित किए बिना चाबियाँ लेकर चले जाना और अपने पास रख लेना एक गैर - जिम्मेदाराना कार्य है। यदि श्याम नन्दन की अंतर्रात्मा उसे कोई कार्य करने से रोकती है तो उसे कम- से - कम कलेक्टर साहब को अवश्य सूचित करना चाहिए। एक अच्छे लोक सेवक से इस तरह के आचरण की उम्मीद नहीं की जा सकती।

स्थिति :- प्रदीप कुमार रामपुर पुलिस थाने के इंस्पेक्टर इंचार्ज हैं। इस पुलिस थाने का भवन काफी पुराना और जर्जर हो चुका है जिसकी शीघ्र ही मरम्मत करना अति आवश्यक हो गया है। पिछले काफी समय से इस कार्य हेतु सरकार के संबंधित विभाग से पैसे की माँग की जा रही है लेकिन अब तक सरकार की तरफ से कोई पैसा नहीं मिला है। एक दिन उस क्षेत्र में भयानक तूफान आता है और आसपास की दुकानों, मकानों को काफी नुकसान पहुँचता है। थोड़ी- बहुत क्षति पुलिस थाने की भवन भी पहुँचती है किन्तु अभी भी काम चलाऊ स्थिति बनी हुई है। सरकार तूफान से हुए नुकसान का आँकलन करने के लिए तथा राहत राशि प्रदान करने के लिए एक विपदा आकलन टीम भेजती है।

अध्याय – 2

अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम, फ्रांसीसी क्रांति (1789 ईस्वी) व औद्योगिक क्रांति

अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम

क्रांति पूर्व अमेरिका की स्थिति

उत्तर में मेनचेस्टर से दक्षिण में जॉर्जिया तक कुल तेरह अंग्रेजी बस्तियाँ थी। इन उपनिवेशों में 1713 ई. में से 1763 ई. के बीच जनसंख्या में चार गुना वृद्धि हुई। इसकी तुलना में क्षेत्रफल में तीन गुना बढ़ोत्तरी हुई जो कि बस्तीवासियों के पश्चिम की ओर अग्रसर होने से हुई। 1713 ई. से 1763 ई. के बीच बड़ी संख्या में अंग्रेज, स्कॉट, जर्मन तथा फ्रेंच आप्रवासी अमेरिका की बस्तियों में जाकर बसे। ये वाणिज्यवाद के महत्त्वपूर्ण वर्ष थे। अमेरिका के सभी उत्पादनों तथा लकड़ी, चमड़ा, तम्बाकू, चीनी, तांबा, मछली आदि की कीमतें इंग्लैण्ड तथा यूरोप में तेजी से बढ़ी जिससे अमेरिकी लोग समृद्ध हुए, यद्यपि इंग्लैण्ड की व्यापारिक नीति लगातार बाधाएँ खड़ी करती रही। 50 वर्षों की लगातार खुशहाली के कारण ही अमेरिकी तत्कालीन विश्व में ऊँचा जीवन स्तर बना पाये। इंग्लैण्ड की यात्रा पर जाना अब एक आम बात बन गई थी। विदेशों से पुस्तकों का आयात बहुत बड़े स्तर पर किया जाने लगा था और कई पत्र-पत्रिकायें अमेरिका में भी छपने लगी थीं। पत्रकारिता से अमेरीकियों का लगाव पैदा हो चुका था। बोस्टन व अनापोलीस जैसे नगरों में इंग्लैण्ड की तुलना में अधिक सुन्दर भवनों का निर्माण किया गया। कई प्रसिद्ध अमेरिकी विश्वविद्यालय जैसे प्रिंस्टन, येल, डार्टमाउथ, ब्राउन इत्यादि क्रांति से पूर्व स्थापित हो चुके थे। क्रांति काल के महत्त्वपूर्ण अमेरिकी नगर-बोस्टन, न्यूयार्क, जेम्स टाउन, चार्ल्स टाउन, सवानाह, फिलोडेलफिया आदि थे। नगरों ने इस क्रांति में प्रमुख भूमिका निभाई।

1) अमेरिकी दृष्टिकोण में परिवर्तन

अमेरिका की क्रांति का एक उल्लेखनीय कारण यहाँ की जनता का परिवर्तित दृष्टिकोण था। लोग नए रूप में सोचने लगे और नए उद्देश्यों की प्राप्ति का प्रयास करने लगे। यह परिवर्तन निम्नलिखित परिस्थितियों एवं घटनाओं का परिणाम था –

1. **उपनिवेशों में इंग्लैण्ड के प्रति प्रेम का अभावः-** अधिकांश उपनिवेशों के लक्ष्य में इंग्लैण्ड की सरकार के प्रति द्वेष और प्रतिकार की भावना विद्यमान थी। जो अंग्रेज धार्मिक अत्याचारों से परेशान होकर उपनिवेशों में आकर बस गए थे, उनमें इंग्लैण्ड के चर्च और वहाँ की सरकार के प्रति सहानुभूति और प्रेम का अभाव स्वाभाविक था। इंग्लैण्ड के शासकों ने उनके शोषण की जो नीति अपनाई थी, वह उन्हें क्षुब्ध करने के लिए काफी थी। अंग्रेजों के अलावा अन्य यूरोपीय देशों से जो लोग उपनिवेशों में आकर बस गए थे, उनसे इंग्लैण्ड के प्रति सहानुभूति की आशा नहीं की जा सकती थी। इंग्लैण्ड और अमेरिका में स्थापित उपनिवेशों में निकट संपर्क का विकास नहीं हो पाया था, उनके आपसी संबंध बहुत ही कच्चे थे और इंग्लैण्ड के विरुद्ध विरोधी भाव ही अधिक पक्के थे।
2. **विरोधी उद्देश्यः-** ब्रिटिश सरकार और अमेरिकी जनता के उद्देश्य विरोधी थे। सरकार के मतानुसार ब्रिटिश संसद का सभी अमेरिकी उपनिवेशों पर पूरा नियंत्रण रहना चाहिए था। अमेरिकी जनता के अनुसार उपनिवेशों का प्रशासन उनका घरेलू मामला था अतः स्वायत्तता मिलनी चाहिए थी। इस विरोध ने अमेरीकियों को विद्रोही बना दिया।
3. **स्वातन्त्रय प्रेम और प्रगति की आकांक्षाः-** उपनिवेशों के निवासी उत्साही और स्वतंत्रता प्रिय थे। उनमें लोकतंत्रात्मक शासन पद्धति और स्वतंत्रता का इंग्लैण्ड के लोगों से भी अधिक प्रचार था। अतः स्वाभाविक था कि ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीति के विरुद्ध प्रतिक्रिया की शुरुआत हुई और क्रमशः अमेरिकी भूमि पर स्वतंत्रता के फूल खिले यहाँ के लोग अपने अधिकारों के प्रति सजग हुए और ब्रिटेन के शोषण तथा कुलीनतंत्री विशेषाधिकारों के विरोधी बन गए। अमेरिका में जो लोग उद्यमी और महत्वाकांक्षी थे, वे उन्नति के शिखर पर पहुँचना चाहते थे। ब्रिटिश सरकार ने अपने प्रशासन और कानूनों द्वारा उनके मार्ग को अवरुद्ध किया, फलतः वे उनके विरोधी बन गए और क्रांति में शामिल हो गए।
4. **दमनकारी व्यापारिक कानून और कर वृद्धिः-** ग्रेट ब्रिटेन में वणिकवादियों का प्रभाव था। उनकी प्रेरणा से ब्रिटिश सरकार ने दमनकारी व्यापारिक कानून बनाए। इससे अमेरिकी जनता के आत्म-सम्मान को ठेस लगी। ब्रिटिश इतिहासकार लेकी के अनुसार इन कानूनों ने अमेरिकी दृष्टिकोण को विद्रोही बना दिया। ब्रिटिश संसद ने अमेरिकी व्यवसाय और जहाजरानी को प्रभावित करने वाले अनेक कानून बनाए। इन कानूनों से दक्षिण की अपेक्षा उत्तरी उपनिवेशों को अधिक हानि पहुँची क्योंकि उनके पास ऐसे मूल्यवान पदार्थ नहीं थे जिन्हें इंग्लैण्ड भेजकर वे बदले में तैयार माल प्राप्त कर लेते। ब्रिटेन से उपनिवेशों को जाने वाले माल पर निर्यात कर 2/5 प्रतिशत बढ़ाकर 5 प्रतिशत कर दिया गया। ब्रिटिश सरकार ने उपनिवेशियों पर जब नए-नए कर लगाना शुरू कर दिए तो उनमें विद्रोह की भावना भड़क उठी।
5. **नई संस्थाओं का जन्मः-** 1600 में अमेरिका में विभिन्न राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक संस्थाओं का गठन हुआ जो अपूर्व तथा अद्वितीय थी। इन्होंने अमेरिका को एक नया जीवन-दर्शन दिया यहाँ आत्म विश्वास जाग्रत हुआ और अमेरिकी जनता अपने को ब्रिटेन से हीन अथवा अधीनस्थ मानने को तैयार नहीं हुई।
6. **प्रगति की आकांक्षाएँः-** अमेरिका में जो लोग उद्यमी और महत्वकांक्षी थे, वे उन्नति के शिखर पर पहुँचना चाहते थे। ब्रिटिश सरकार ने अपने प्रशासन और कानूनों द्वारा उनके मार्ग को अवरुद्ध किया। फलतः वे उनके विरोधी बन गए और क्रांति में शामिल हो गए।

2) आर्थिक कारण

अमेरिका में आर्थिक दृष्टि से विभिन्न वर्ग (व्यापारी, बागान मालिक, दलाल, सट्टेबाज आदि) बन चुके थे। इनके हितों को ब्रिटिश शासन ने विभिन्न प्रकार से हानि पहुँचायी अतः वे क्रांति के समर्थक बन गए। क्रांति के आर्थिक कारणों में उल्लेखनीय कानून और नीतियाँ इस प्रकार हैं-

(1) व्यावसायिक और जहाजरानी कानूनः- ब्रिटिश संसद ने अमेरिकी व्यवसाय और जहाजरानी को प्रभावित करने वाले अनेक कानून बनाए। इन्होंने दक्षिण की अपेक्षा उत्तरी उपनिवेशों को अधिक हानि पहुँचाई क्योंकि उनके पास मूल्यवान पदार्थ नहीं थे, जिन्हें इंग्लैण्ड ले जाते और बदले में तैयार माल लाते इंग्लैण्ड से आने वाले माल का भुगतान नकद करना पड़ता था। उत्तर के उपनिवेश (न्यू-इंग्लैण्ड) निर्यात का माल वेस्टइण्डीज से माँगते थे और उसे गेहूँ, माँस तथा कच्चा माल भेजते थे। वे गुड़ भी

मंगवाते थे जिससे शराब बनाकर अफ्रीका के गुलामों को बेची जाती थी। ब्रिटिश संसद ने 1733 में गुड़ कानून बनाया। इसके अनुसार वेस्टइण्डीज के साथ न्यू-इंग्लैण्ड के गुड़-व्यापार को नियंत्रित कर दिया गया। यदि इस कानून को कठोरता से लागू किया जाता तो न्यू-इंग्लैण्ड को भारी हानि उठानी पड़ती। इस कानून की व्यापक अवहेलना की गई। तस्कर व्यापार करना कोई अपवाद नहीं रह गया। अंग्रेज अधिकारियों ने इस ओर अधिक ध्यान नहीं दिया। कुछ ने यह कहकर समर्थन भी किया कि अन्त में यह रकम इंग्लैण्ड के व्यापारियों के पास ही जाती है।

(2) <u>निर्यात कर में वृद्धिः</u>- ग्रेट ब्रिटेन से उपनिवेशों को जाने वाले माल पर निर्यात कर 2.5% से बढ़ाकर 5% कर दिया गया। चुँगी अधिकारियों को अधिक शक्ति से काम करने के आदेश दिए गए। इन अधिकारियों की संख्या बढ़ाई गई।

(3) <u>दक्षिण की आर्थिक नीतिः</u>- दक्षिण की स्थिति पर्याप्त भिन्न थी। उसका व्यापार वेस्ट-इण्डीज के साथ नगण्य था। वह अपनी तम्बाकू, नील, जहाजों का सामान, खाल आदि इंग्लैण्ड भेजता था और वहाँ से बदले में तैयार माल मंगाता था। यह व्यापार दूसरे उपनिवेशों के लिए हानिकारक और इंग्लैण्ड के लिए लाभप्रद था। यह जिन ब्रिटिश व्यापारियों और एजेन्टों के हाथ में था, वे उपनिवेशों से कच्चा-माल कम कीमत पर खरीदते थे और निर्मित माल अधिक कीमत पर बेचते थे। बागान-मालिक लंदन से मनमाना आयात करते थे और उसका भुगतान हुण्डियों द्वारा करते थे। वे ऋण चुकाने में बर्बाद हो जाते थे। क्रांति के आरम्भ में वर्जीनिया पर ब्रिटिश व्यापारियों का कर्ज अनुमानतः 20 लाख पौण्ड था। ये कर्जदार अपने अंग्रेज साहूकारों से घृणा करते थे। 1750 के बाद दक्षिणी उपनिवेशों के कुछ विधानमंडलों ने कर्जदारों के पक्ष में दिवालिया नियम तथा स्थान कानून बनाए जो कर्जदारों के पक्ष में थे। इंग्लैण्ड की प्रिवी कांउसिल ने विशेषाधिकार द्वारा उन्हें अस्वीकार कर दिया। इससे उपनिवेशों में अपमानजनक भावना फैल गई और वहाँ के निवासी यह समझने लगे कि इंग्लैण्ड के धनी लोग निर्धनों को सता रहे हैं। उपनिवेशों में कागजी मुद्रा का प्रचलन हो चुका था किन्तु इंग्लैण्ड की संसद इसका लगातार विरोध कर रही थी।

(4) <u>भूमि पट्टा संबंधी नीतिः</u>- उपनिवेशों में धन-उत्पादन के दो प्रमुख तरीके थे –

(क) आदिवासियों के साथ 'फर' चमड़े का व्यापार

(ख) जंगल के बड़े क्षेत्रों को प्राप्त करने, विभाजित करने और बेचने के लिए कम्पनियों की स्थापना कर के व्यापारी और भूमि के सट्टेबाज अपने कार्य में पूरी स्वतंत्रता चाहते थे। पेन्सिलवेनियाँ, वर्जीनिया और केरोलीना के मैदानों के निवासी जमीनें प्राप्त करने के लिए अत्यधिक उत्सुक थे। ब्रिटिश सरकार न इस संबंध में कठोर नीति का पालन किया। 1763 में उसने घोषणा की कि अल्पेशियन पहाड़ की चोंटी तक की सभी बत्तियाँ समाप्त कर दी जाये। इस सीमा से बाहर की जमीन को शाही-क्षेत्र बनाकर अस्थाई तौर पर निषिद्ध कर दिया गया। सम्राट की स्वीकृति के बिना इसे बेचा नहीं जा सकता था। यह घोषणा इसलिए की गई ताकि कुछ समय में यहाँ के मूल निवासी चले जाएँ और बाद में जमीनों को औपनिवेशिक बस्तियों के लिए खोल दिए जाए।

3) **<u>धार्मिक कारणः</u>-** अमेरिकी जनता में कई कारणों से धार्मिक असंतोष पैदा हुआ। इस समय विभिन्न उपनिवेशों के चर्चो को ब्रिटिश राज्य का समर्थन प्राप्त था और राज्य विरोधी होने के कारण जनता इन चर्चो की भी आलोचना करने लगी। यह आलोचना मुख्यतः एंग्लिकन चर्च के विरुद्ध की गई। इस चर्च के कठोर अनुशासन ने अमेरीकियों में विद्रोह की भावना भर दी।

जनता का धार्मिक विरोध मूलतः दो प्रकार का था

(1) वह धर्मिक कर नहीं देना चाहती थी क्योंकि इसके आधार पर पादरी लोग निवासी एवं भ्रष्ट बन गए थे। दक्षिणी राज्यों में इन पादरियों की अतुल सम्पत्ति और सम्मान था।

(2) चर्च तथा धार्मिक सम्प्रदाय के अनेक लोग राजनीति में सक्रिय हो गए थे। अमेरिकी जनता उनसे भयभीत तथा आशंक्ति हो गई और उनके कार्यों का विरोध करने लगी।

<u>दोषपूर्ण शासन व्यवस्था</u>

उपनिवेशों की शासन व्यवस्था के तीन प्रमुख अंग थे-

1 गवर्नर,

2 गवर्नर की कार्यकारिणी समिति

3 विधायक सदन अथवा असेम्बली।

गवर्नर और उसकी कार्यकारिणी समिति तो सम्राट

फ्रांस ने सम्पूर्ण कोचीन - चीन पर अपने शासन का विस्तार कर लिया।

9) फ्रांसीसियों को कोचीन-चीन (दक्षिणी वियतनाम) पर अपना आधिपत्य स्थापित करने में आठ वर्ष लगे और टोकिंग (उत्तरी वियतनाम) को अधिकार में लाने के लिए आगामी सोलह वर्ष तक प्रयास करना पड़ा। इसी अवधि में अनाम (मध्य वियतनाम) पर भी उनका अधिकार हो गया। इस प्रकार, समूचे वियतनाम उनके अधिकार में आ गया।

अफ्रीका में साम्राज्यवाद-

अफ्रीका का बँटवारा

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में अफ्रीका का बंटवारा विश्व की एक महान घटना है। 1871 ई. से पूर्व अफ्रीका का थोड़ा सा भाग ही यूरोप के देशों के अधीनस्थ हुआ था। दक्षिण में ब्रिटेन व डच ने ओरेंज तथा वाल नदियों के भू-भाग पर अपना अधिकार कर लिया था। 1843 में इंग्लैण्ड ने केप कालोनी (Cape) तथा नेटाल पर अपना अधिकार कर लिया था। अफ्रीका के पश्चिमी तट पर स्थित सेनेगल (Senegal), आइवरी कोस्ट (Ivory Cost) व गेबून पर फ्रांस का अधिकार हो गया था। इस महाद्वीप के पूर्वी व पश्चिमी भाग के कुछ प्रदेशों पर पुर्तगाल, फ्रांस व ग्रेट ब्रिटेन ने अपना-अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था। ट्यूनिस (Tunis) तथा ट्रिपोली (Tripoli) पर तुर्की (Turkey) का आधिपत्य था, मिस्त्र, इंग्लैण्ड व फ्रांस को कर अवश्य देता था पर वह आंतरिक मामलों में पूर्व स्वतंत्र था। इस महाद्वीप का वास्तविक बंटवारा 1876 ई. में आरंभ हुआ।

लियोपोल्ड द्वितीय व अफ्रीका का बँटवारा - लियोपोल्ड बेल्जियम का शासक था। उसने 1876 ई. में ब्रूसेल्स (Brussels) में भूगोलवेत्ताओं का एक गैर सरकारी सम्मेलन आयोजित किया। इस सम्मेलन में सम्राट ने अफ्रीका के प्रदेशों की खोज करने तथा उसके असभ्य निवासियों को सभ्य बनाने के सुझाव आमंत्रित किये। स्टेनली के सहयोग से लियोपोल्ड ने कांगों फ्री स्टेट की स्थापना की और स्वयं उसका शासक बन गया। इस दिशा में स्टेलनी ने 1875-76 में कांगों नदी घाटी की खोज । वह खोज बड़ी महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई। इस खोज ने उसके प्राकृतिक साधनों की ओर अपने देशवासियों का ध्यान आकर्षित किया। इंग्लैण्ड उस समय पूर्वी समस्या में उलझा हुआ था। इस कारण बेल्जियम को इधर पांव पसारने का अवसर मिल गया। बेल्जियम के शासक के इस कार्य ने यूरोप के अन्य देशों का भी ध्यान अफ्रीका की ओर आकर्षित कर दिया। सब वहां पर अपने - अपने उपनिवेशों की स्थापना के प्रयास करने लगे।

कांगो (साम्राज्यवाद का एक क्रूर उदाहरण)

अफ्रीका महाद्वीप को वहां के प्राकृतिक वातावरण के आधार पर पांच भागों में विभक्त कर सकते हैं। उत्तरी अफ्रीका-इसके अधिकांश देश भू-मध्य सागर के तट पर स्थित थे। इस कारण वे यूरोप के साम्राज्यवादी देशों की दृष्टि में आ चुके थे। इसका दूसरा प्राकृतिक भाग है-मध्य अफ्रीका। इस भाग में इस महाद्वीप का सहारा रेगिस्तान पश्चिम से पूर्व की ओर विस्तृत है। लीबिया व सूडान का दक्षिणी भाग भी इसी रेगिस्तान में आते हैं। रेगिस्तान भाग विस्तृत एवं भयानक है। इस रेगिस्तान के कारण ही अफ्रीका के मध्यवर्ती भाग के विषय में विश्ववासियों को 19 वीं सदी के पूर्वार्द्ध तक कोई जानकारी नहीं थी। परन्तु इंग्लैंड निवासी डेविड लिविंगस्टन (David Livingstone) ने उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में इस सहारा रेगिस्तान को पार करने की हिम्मत की वह बीस वर्ष तक इस दुर्दम्य रेगिस्तान के भागों की खोज कार्य से जेम्बिसी एवं कांगो नदी के क्षेत्र भी नहीं बच सके। वह एक उत्साही धर्म प्रचारक था, उसके इस खोज कार्य के उपरान्त अन्य यूरोपीय उत्साही खोजकर्त्ताओं (बार्थ, वेगल, नाक्टिगाल) ने सूडान के रेगिस्तानी भागों की खोज की। इनके उपरान्त हेनरी मार्टन स्टेनली मध्य अफ्रीका में गया और उसने 1875-76 में कांगो नदी की घाटी तथा उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र का अन्वेषण किया अपनी कठिन यात्रा के उपरान्त उसने एक पुस्तक 'थ्रू दि डार्क कान्टीनेन्ट' (Through the Dark Continent) लिखीं। इस पुस्तक के प्रकाशन के उपरान्त मध्यवर्ती अफ्रीका का पता चला। इसका तीसरा भाग है पश्चिमी अफ्रीका चौथा भाग पूर्वी अफ्रीका तथा पांचवा भाग दक्षिणी अफ्रीका है। 1875 तक इस महाद्वीप का कुल 1/10 भाग ही यूरोप के साम्राज्यवादी देश अपने अधीनस्थ कर सके थे। पर 1875 के उपरान्त यूरोप के साम्राज्यवादी देश इस पर ऐसे झपटे कि 1910 तक तो इसका बँटवारा पूर्ण हो गया।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - ⬇ (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKj14nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
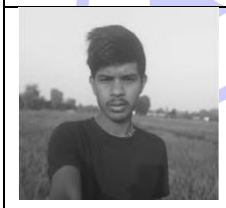	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
	Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others.....

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/40daqf

Online order करें – https://shorturl.at/qR235

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE